संयुक्त राष्ट्र संघ में अणुव्रत की गूंज

(लोक सूचना विभाग एवं संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता प्राप्त गैर–सरकारी संगठनों के संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय न्यूयार्क में सम्पन्न 65वें वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर अणुव्रत विश्व भारती (अणुविभा) द्वारा अणुव्रत एवं वहनीयता (सस्टेनेबिलिटी) पर आयोजित कार्यशाला तथा शांतिकर्मियों के महाकुम्भ का संक्षिप्त विवरण)

– डॉ. सोहनलाल गाँधी

पृष्ठभूमि

द्वितीय विश्व युद्ध की त्रासदी के बाद अंतर्राष्ट्रीय शांति, सुरक्षा एवं सहयोग के लिए 1945 में 51 देशों ने मिलकर संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना की थी। अब इसके सदस्य देशों की संख्या 193 तक पहुँच गई है । इसका मुख्यालय न्यूयार्क में है तथा मुख्य संस्थाएँ जैसे साधारण सभा, सुरक्षा परिषद, ट्रस्टीशिप कौंसिल तथा आर्थिक एवं सामाजिक परिषद आदि भी इसी मुख्यालय में स्थित है। अन्य महत्वपूर्ण संस्थाएँ जैसे यूनेस्को, खाद्य एवं कृषि संगठन, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन, विश्व स्वास्थ्य संगठन, सामाजिक विकास शोध संस्थान, संयुक्त राष्ट्र बाल कोष, अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय तथा संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम विभिन्न सदस्य देशों – अर्थात फ्रांस, इटली, स्वीट्जरलैण्ड, अमेरिका, नीदरलैण्ड तथा केन्या आदि में स्थित है । इनके अलावा संयुक्त राष्ट्र का अपना विश्वविद्यालय भी है जिसका मुख्यालय टोक्यो में है । यह एक तरह से विश्व के विश्वविद्यालयों का फेडरेशन है ।

संयुक्त राष्ट्र का मुख्य उद्देश्य दुनिया में अमन–चैन कायम करना तथा किसी भी क्षेत्र में युद्ध की स्थिति बनने पर उसे रोकना । अगले वर्ष संयुक्त राष्ट्र संघ अपनी स्थापना के 70 वर्ष पूरा करने जा रहा है । जब इसकी स्थापना हुई तो लोगों में यह आशंका थी कि इसका हश्र भी वही होगा जो लीग ऑफ नेशन्स का हुआ। लेकिन सब आशंकाएँ निर्मूल साबित हुई है। आज संयुक्त राष्ट्र न केवल युद्ध मुक्त विश्व की परिकल्पना को साकार करने में लगा है अपितु उपरोक्त विभिन्न संस्थानों, संगठनों एवं इकाईयों के माध्यम से मानव जाति के बेहतर भविष्य के मार्ग में आने वाली हर कठिनाई का समाधान खोजने में लगा हुआ है । हिंसा, अशान्ति, गरीबी, मानवाधिकार, असाध्य रोग, पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी असंतुलन, जलवायु परिवर्तन एवं वहनीयता आदि सभी समस्याओं के समाधान का यह प्रतिष्ठित विश्व मंच बन गया है । यह नोबेल शांति पुरस्कार से भी नवाजा जा चुका है ।

इसकी स्थापना के साथ ही यह अनुभव किया गया कि इसके शांति के प्रयासों में बिना जनभागिता के विश्व में सामाजिक सौष्ठव की परिकल्पना थोथी साबित होगी । अतः इसकी स्थापना के साथ ही कुछ चुने हुए गैर–सरकारी संगठनों को जोड़ा गया । संयुक्त राष्ट्र की मान्यता के लिए कुछ अर्हताएँ निश्चित की गई । संयुक्त राष्ट्र द्वारा मनोनीत एक विशेष समिति यह निर्णय करती है कि किस संस्था को संयुक्त राष्ट्र से उसके कार्यक्रमों की क्रियान्विति में सहयोग के लिए जोड़ा जाए। हर संस्था को एक कठिन प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है जिसमें सदस्य देश का अनुमोदन भी आवश्यक है। हर वर्ष संयुक्त राष्ट्र लोक सूचना विभाग इन मान्यता प्राप्त गैर–सरकारी संस्थाओं का वार्षिक अधिवेशन आयोजित करता है।

विश्व मंच पर अणुव्रत की प्रथम प्रस्तुति

अणुविभा को संयुक्त राष्ट्र के कार्यक्रमों में सहभागिता की प्रथम अस्थाई मान्यता सन् 1995 में प्राप्त हुई। उस वर्ष कोपनहेगन में संयुक्त राष्ट्र द्वारा सामाजिक शिखर सम्मेलन का आयोजन हो रहा था तथा राष्ट्राध्यक्षों के साथ गैर–सरकारी संस्थाओं से भी उक्त शिखर सम्मेलन में सहभागिता के लिए आवेदन माँगे गए। इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य गरीबी उन्मूलन, सामाजिक एकता तथा रोजगार था। मैंने अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य तुलसी को उक्त शिखर सम्मेलन की जानकारी दी । उन्होंने कहा – *'अणुव्रत की वैश्विक प्रस्तुति का सुअवसर है, प्रयत्न करो, सफलता मिलेगी ।'* गुरुदेव के इन शब्दों से मुझे प्रेरणा मिली । मैंने अपने आवेदन पत्र में अणुव्रत को सामाजिक एकता एवं सामाजिक सौष्ठव के सशक्त स्रोत के रूप में प्रस्तुत किया । अणुविभा को अणुव्रत के इसी उद्देश्य के कारण कोपनहेगन सामाजिक शिखर सम्मेलन जैसे महत्वपूर्ण वैश्विक समारोह में सहभागिता का अवसर प्राप्त हो गया । यह हमारे लिए बड़ी उपलब्धि थी क्योंकि 192 देशों में काम कर रही समान उद्देश्य वाली संस्थाओं के हजारों प्रतिनिधियों से सम्पर्क का अवसर था। मैंने अपने जीवन में राजनीतिज्ञों एवं स्वयंसेवी संस्थाओं के कार्यकर्ताओं का इतना बड़ा जमघट कहीं नहीं देखा। इस सामाजिक शिखर समारोह के लिए बनाया गया विशाल वातानुकूलित डोम वस्तुतः एक नगर ही था। इसमें अनेक छोटे–बड़े सभागार तथा एक क्षेत्र में राष्ट्राध्यक्षों के बोलने के लिए विशेष मंच था जिसमें गैर–सरकारी संस्थाओं के प्रतिनिधियों के बैठने के लिए भी स्थान आरक्षित था । मैंने 'अणुव्रत और सामाजिक एकता' पर एक कार्यशाला आयोजित की जिसमें 100 से अधिक शांतिकर्मियों ने भाग लिया । वे विभिन्न देशों में काम कर रही गैर–सरकारी संस्थाओं के

पदाधिकारी तथा संयुक्त राष्ट्र के कुछ अधिकारी थे । उपस्थित बंधुओं के लिए अणुव्रत नया शब्द था । मैंने गुरुदेव तुलसी को एक ऐसा युगान्तकारी धार्मिक आचार्य बताया जो धर्म एवं नैतिकता को पर्यायवाची मानते थे। मैंने कहा– *वैयक्तिक प्रतिबद्धता से समाज को बदलने का यह अभिनव अभियान है। अणुव्रत न केवल सामाजिक समरसता निश्चित करता है अपितु धनार्जन की सीमा तय कर आर्थिक असमानता एवं गरीबी भी दूर करने में भी सहायक बनता है ।*

प्रश्नोत्तर से लगा कि लोग अणुव्रत के उद्देश्यों एवं उसमें निहित उदात्त चिंतन से प्रभावित हुए।

संयुक्त राष्ट्र द्वारा अणुविभा को मान्यता

कोपनहेगन सम्मेलन में अणुव्रत के उद्देश्यों को मिले समर्थन से प्रोत्साहित होकर मैंने अणुविभा को संयुक्त राष्ट्र लोक सूचना विभाग की स्थाई मान्यता के लिए आवेदन देना प्रारम्भ किया और अंत में दिसम्बर 1998 में हमें सफलता प्राप्त हुई । उस वर्ष विश्व की कुल 29 संस्थाओं को संयुक्त राष्ट्र लोक सूचना विभाग के साथ सहयोग के लिए स्वीकृत किया गया । एशिया से केवल "अणुविभा" को ही चुना गया । चार दिसम्बर 1998 को जारी संयुक्त राष्ट्र की प्रेस विज्ञप्ति संख्या पी1/1101 में कहा गया है – **'अणुविभा अपने अहिंसा शिक्षण कार्यक्रम द्वारा बहुसांस्कृतिक समझ और सहिष्णुता पर केन्द्रित है, इसलिए उसे मान्यता दी जा रही है।'** गुरुदेव के प्रताप से हमें अणुव्रत की वैश्विक प्रस्तुति के लिए विश्व के विभिन्न देशों में होने वाले सम्मेलनों के अतिरिक्त संयुक्त राष्ट्र का मंच भी उपलब्ध हो गया । जैनों की केवल दो ही संस्थाओं को ही यह मान्यता प्राप्त है जिसमें एक नॉर्थ अमेरिका में स्थित है और दूसरी अणुविभा जो भारत में है।

संयुक्त राष्ट्र के कार्यक्रमों में सहभागिता के अवसर

संयुक्त राष्ट्र लोक सूचना विभाग इसके साथ सहयोग के लिए मान्यता प्राप्त संस्थाओं का हर वर्ष एक वार्षिक सम्मेलन आयोजित करता है । संयुक्त राष्ट्र के अस्तित्व में आने के कुछ वर्षो के बाद ही इसकी गतिविधियों में गैर–सरकारी संगठनों की सहभागिता का क्रम शुरू हो गया था। अब तक 64 अधिवेशन हो चुके हैं जो अधिकांश संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में ही आयोजित होते रहे हैं । मुख्यालय के भवन में नवीनीकरण के कारण 2008 से 2012 तक ये सम्मेलन अन्य देशों में आयोजित किए गए । 65वें अधिवेशन का कार्यस्थान (वेन्यू) पुनः संयुक्त राष्ट्र मुख्यलाय में स्थानान्तरित हो गया । यह वार्षिक अधिवेशन गैर–सरकारी संस्थाओं को पारस्परिक सहयोग एवं विचार–विमर्श का अवसर प्रदान करता है । इन सभी मान्यता प्रापत संस्थाओं का मुख्य उद्देश्य दुनिया को युद्ध मुक्त कर शांतिपूर्ण विश्व का निर्माण करना है । इस दृष्टि से यह अधिवेशन समान उद्देश्य वाली संस्थाओं का संगम है । सम्बद्ध संस्थाओं के प्रतिनिधि ही इसमें भाग ले सकते हैं । आयोजन समिति हर अधिवेशन की संयुक्त राष्ट्र के उद्देश्यों के अनुरूप एक थीम (विचारणीय विषय) चुनती है तथा मान्यता प्राप्त संस्थाओं से कार्यशालाओं, समूह में चर्चाओं (पेनल डिस्कशन), गोलमेज वार्ताओं आदि के लिए प्रस्ताव आमंत्रित करती है । इस अधिवेशन में सभी लोग पत्र–वाचन या समूह में चर्चाओं में भाग लेने नहीं आते, अधिकांश लोग सुनने तथा अन्य संस्थाओं के प्रतिनिधियों से सम्पर्क साधने, साहित्य का आदान–प्रदान करने एवं इस अवसर पर प्रदर्शनी लगाने के लिए आते हैं । कार्यशालाएँ आयोजित करने का मौका 40 संस्थाओं को ही मिलता है जबकि दुनिया भर से 500 से ज्यादा प्रस्ताव प्राप्त होते हैं। प्रस्ताव में कार्यशाला आयोजित करने की इच्छुक संस्था को कार्यशाला का शीर्षक तथा सारांश भेजना होता है और गुणवत्ता के आधार पर चयन होता है।

अणुव्रत की वैश्विक प्रस्तुति के लिए इससे बेहतर कोई अन्य मंच नहीं है । इसमें 192 देशों से, जो संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देश हैं, शांतिकर्मी एवं सामाजिक कार्यकर्ता भाग लेने आते हैं । अणुविभा ने तब ही सहभागिता की जब उसका कार्यशाला का प्रस्ताव मंजूर हुआ। अब तक संयक्त राष्ट्र के तत्वावधान में अणुविभा द्वारा जो कार्यशालाएँ आयोजित की गई, उसके विषय तथा जिन्होंने भाग लिया उनका संक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है :

वर्ष और स्थान	विषय	प्रतिनिधि जिन्होंने भाग लिया
2002, न्यूयार्क	बच्चों के लिए शांति एवं अहिंसा की संस्कृति : अवधारणा एवं दृष्टिकोण	श्री अरविंद वोरा, (यूएसए) डॉ. पन्ना शाह, (यूएसए) श्री संचय जैन, (भारत)
2005, न्यूयार्क	अहिंसा प्रशिक्षण : आंतरिक रूपान्तरण का मार्ग	डॉ. सोहनलाल गाँधी, (भारत) श्री महेन्द्र जैन, (भारत) श्री अरविंद वोरा, (यूएसए) डॉ. पन्ना शाह, (यूएसए)
2007, न्यूयार्क	संयुक्त राष्ट्र द्वारा शांति के लिए अंतःधार्मिक समझ एवं सहयोग पर आयोजित उच्च स्तरीय संवाद के अवसर पर सम्पन्न इंटरएक्टिव हियरिंग में डॉ. सोहनलाल गाँधी का पेनल स्पीकर	

	के रूप में चयन । अणुव्रत एवं अहिंसा पर 192 देशों के प्रतिनिधियों के सामने अपूर्व प्रस्तुति	
2009, मेक्सिको	अहिंसा की शक्ति से आतंक को विखण्डित करना	डॉ. सोहनलाल गाँधी, (भारत) श्री तेजकरण सुराणा, (भारत) श्री किरीट दफ्तरी, (यूएसए)
2010, मेलबोर्न	सामाजिक सौष्ठव के लिए अणुव्रत एवं प्रेक्षाध्यान	डॉ. सोहनलाल गाँधी, (भारत) श्री तेजकरण सुराणा, (भारत) श्री संचय जैन, (भारत) श्री बुद्धसिंह सेठिया, (भारत) श्री किरीट दफ्तरी, (यूएसए)

उसके बाद 2014 के अधिवेशन में अणुविभा द्वारा प्रस्तावित अणुव्रत और सस्टेनेबिलिटी (वहनीयता) पर कार्यशाला स्वीकृत हुई । उसका विस्तृत विवरण आगे के पृष्ठों में दिया गया है । यहाँ पर यह उल्लेख करना जरूरी है कि श्री तेजकरण जी सुराणा के 2005 से अणुविभा के साथ जुड़ने के बाद अणुव्रत के अंतर्राष्ट्रीय अभियान का अप्रत्याशित विस्तार हुआ । उनके नेतृत्व में 4 विशाल अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, तीन अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा शांति प्रशिक्षण शिविर तथा संयुक्त राष्ट्र में तीन कार्यशालाएँ आयोजित की जा चुकी हैं। वास्तविकता तो यह है कि संयुक्त राष्ट्र में स्वयंसेवी संस्थाओं के 65वें अधिवेशन में भाग लेने की पहल श्री तेजकरण जी सुराणा ने ही की और उनके दृढ़ संकल्प के कारण ही इसमें सबकी सहभागिता सम्भव हुई । सबसे अधिक प्रसन्नता की बात है कि अणुविभा के महामंत्री श्री संचय जैन अपने पुज्य पिताजी एवं हम सबके लिए श्रद्धेय श्री मोहनलाल जी जैन की विरासत को चिंतनपूर्वक आगे बढ़ा रहे हैं। बालोदय पर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उनकी प्रस्तुतियाँ प्रशंसनीय रही हैं।

संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय न्यूयार्क में अणुव्रत की गूँज

चार वर्ष बाद 27–28–29 अगस्त, 2014 को संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में आयोजित संयुक्त राष्ट्र लोक सूचना विभाग एवं गैर–सरकारी संस्थाओं के 65वें वार्षिक अधिवेशन में अन्य संस्थाओं के प्रस्तावों की कड़ी प्रतिस्पर्धा में **'अणुव्रत के परिप्रेक्ष्य में भविष्य की पारिस्थितिक वहनीयता तथा वहनीय जीवन का लक्ष्य प्राप्त करने की योजना (इको–सस्टेनिबिलिटी ऑफ द फ्यूचर : स्ट्रेटीजीज फॉर सस्टेनेबल लिविंग)'** पर अणुविभा का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया । गणाधिपति गुरुदेव तुलसी के जन्म शताब्दी के अवसर पर अणुव्रत तथा सस्टेनिबिलिटी पर संयुक्त राष्ट्र संघ मुख्यालय में इस कार्यशाला का आयोजन उन्हें सच्ची श्रृद्धांजली थी ।

65वें सम्मेलन का विचारणीय विषय

गैर–सरकारी संगठनों एवं संयुक्त राष्ट्र लोक सूचना विभाग के इस 65वें अधिवेशन का मुख्य विषय था – **'2015 तथा उसके आगे : हमारे कार्यों की विषय सूची' ।** हम कहाँ से चले, अभी हम कहाँ हैं और अब हम किधर जा रहे हैं । आयोजकों की दृष्टि में 2015 के पूर्व और बाद में भी जो मुद्दा संयुक्त राष्ट्र के विभिन्न मंचों पर छाया रहा या रहेगा, वह है सस्टेनिबिलिटी ऑफ द अर्थ (पृथ्वी की वहनीयता) । संयुक्त राष्ट्र की मुख्य चिंता है – विकास को कैसे वहनीय बनाया जाए ताकि मानव जाति का अस्तित्व बना रहे । उसका यह भी स्पष्ट विचार है कि नागरिक संगठनों (सिविल सोसाइटी) की सहभागिता के बिना सरकारें अपने स्तर पर चाहे जितनी योजनाएँ बना लें, परिणाम शून्य ही रहेगा । यह भी कटु सत्य है कि जनता में अभी इन खतरों की न पूरी जानकारी है और न वहनीयता के खतरे के विषय में वैश्विक स्तर पर कोई लोक चेतना जागृत हुई है । वैसे देखा जाए तो मानवता पर यह बहुत बड़ा संकट है।

गत दो सौ वर्षों में पर्यावरणीय एवं पारिस्थितिकीय अपक्षय द्रुत गति से हुआ जिससे पृथ्वी की वहनीयता पर अप्रत्याशित कुप्रभाव पड़ा । पेड़–पौधे, जंगल, प्राकृतिक संसाधन, जलवायु, जैव विविधता, नदियाँ, पहाड़ आदि मानव अस्तित्व के आधार धीरे–धीरे विलुप्त होते गए और मानव जाति की आबादी में बेतहाशा वृद्धि हुई । 200 वर्षों पूर्व मानव जाति की आबादी केवल एक अरब मात्र थी जो अब साढ़े सात अरब हो गई है । पृथ्वी केवल दो अरब मानव आबादी वहन कर सकती है । इस विनाश का मुख्य कारण अवहनीय (अनसस्टेनेबल) विकास है । विज्ञान एवं औद्योगिक क्रांति ने प्राकृतिक उर्जा के स्रोत बहुत कम कर दिए । मानव के धरती पर अवतरण के 59800 वर्ष तक ये प्राकृतिक संसाधन एवं जैव विविधता यथावत बने रहे, संतुलन रहा लेकिन गत दो सौ वर्षों में मानव जाति का अपूर्व विकास हुआ लेकिन गैर–मानवीय जीव क्रमशः नष्ट होते गए, परिणामस्वरूप ओजोन परतों में छेद चौड़े होते गए और आज न केवल जलवायु परिवर्तन का गहन संकट है, अपितु वैश्विक उष्णता (ग्लोबल वार्मिंग) में भी भारी वृद्धि हुई है।

चार हजार प्रतिनिधियों का जमावड़ा

संतोष की बात है कि हर देश में कुछ गैर–सरकारी संगठन समर्पित भाव से जन चेतना जागृत कर रहे हैं। यह सारा संकट मानव कृत है – हमारी अनियंत्रित जीवनशैली – हिंसा, घृणा, धन लोलुपता, वैयक्तिक स्वार्थ का प्राबल्य, करूणा का अभाव तथा लोकहित और परहित की भावना का लुप्त होना । आयोजकों ने इस बार संयुक्त राष्ट्र मान्यता प्राप्त गैर–सरकारी संगठनों को जो नियंत्रण भेजा, उसमें पहली बार उदारता प्रदर्शित कर प्रत्येक संगठन से 20 सदस्य तक भाग लेने देने की घोषणा कर दी । यद्यपि उन्होंने सम्मेलन के 20 दिन पूर्व यह घोषणा वापस ले ली लेकिन बहुत देर हो चुकी थी । 160 देशों से चार हजार से अधिक प्रतिनिधि सम्मेलन में भाग लेने पहुँचे । उनमें 18 वर्ष से 90 वर्ष की उम्र के लोग थे जो विश्व के कोने–कोने से आए थे। हम सब आश्चर्यचकित थे । शांति के लिए बुजुर्ग लोगों का जज्बा न केवल प्रेरणास्पद था अपितु नवयुवकों तथा वयस्कों के लिए अनुकरणीय था । ऐसे युवकों की भी कमी नहीं थी जो अपनी अच्छी नौकरी या कारोबार छोड़कर मानव सेवा को समर्पित थे । ये लोग शांति की तलाश में अपना समय एवं धन खर्च करके न्यूयार्क आए थे। सबकी एक ही चाह थी कि दुनिया में अमन–चैन रहे ।

कार्यशाला के लिए तैयारी : स्थानीय सहयोग

गुरुदेव तुलसी का स्वप्न था कि उन्हें ऐसे समर्पित अणुव्रत कार्यकर्ता मिले जो अपने विकास के साथ–साथ सामाजिक सौष्ठव के लिए भी कुछ करे । संयुक्त राष्ट्र कार्यालय से नियम कार्यशाला का प्रस्ताव तैयार करने के पूर्व ही प्राप्त हो गए थे । प्रस्ताव में हमें एक मोडरेटर, एक मुख्य वक्ता, तीन वक्ता एवं एक युवक वक्ता के नाम भी लिखने के लिए कहा गया । मैंने पूरी तैयारी की । मैंने मोडरेटर के लिए संयुक्त राष्ट्र में अणुविभा के मुख्य प्रतिनिधि श्री अरविंद वोरा से निवेदन किया । उन्होंने मेरा यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। श्री वोरा पहले भी न्यूयार्क में हुई हमारी कार्यशालाओं में मोडरेटर का काम कर चुके थे । उन्होंने मेरा अमेरिका की कई अन्य संस्थाओं से भी परिचय कराया तथा 2007 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा अंतःधार्मिक समझ एवं सहयोग पर आयोजित उच्च स्तरीय संवाद के अवसर पर हुई इन्टरएक्टिव हियरिंग में जब मेरा वक्ता के रूप में चयन हुआ तो वो दोनों दिन साथ रहे तथा सारी व्यवस्थाएँ की । अणुविभा की संयुक्त राष्ट्र संघ में दूसरी वैकल्पिक प्रतिनिधि डॉ. पन्ना शाह तथा युवक प्रतिनिधि श्री आयुश विसारिया को भी वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया और वे सहर्ष तैयार हो गए। अणुविभा के अध्यक्ष श्री तेजकरण जी सुराणा एवं महामंत्री श्री संचय जैन ने तो वक्ता के रूप में पहले ही स्वीकृति दे दी थी। सबको कार्यशाला के मूल विषय – भविष्य की पारिस्थितिकीय वहनीयता तथा वहनीय जीवन के सूत्र – से जुड़े हुए उप–विषय दे दिए गए, उनका विवरण संयुक्त राष्ट्र के अधिकारी डॉ. केनेथ विण्ड एण्डरसन द्वारा संयुक्त राष्ट्र आयोजन समिति को हमारे कार्यशाला की भेजी गई रिपोर्ट में दिया गया है । यह रिपोर्ट आगे के पृष्ठों में दी गई है।

उपरोक्त विषयों पर अणुव्रत और जैन धर्म के परिप्रेक्ष्य में गुणात्मक दृष्टि से उच्च कोटि के पेपर तैयार कराए गए ताकि जैनेतर लोगों के सामने अणुव्रत आचार संहिता, पारिस्थितिकीय समस्या के समाधान में व्यावहारिक सूत्र के रूप में प्रस्तुत की जा सके। न्यूयार्क में रहने वाले अणुविभा के तीनों प्रतिनिधियों ने इस कार्यशाला के सफल आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । अरविंद भाई ने इस कार्यशाला में भाग लेने वाले सभी साथियों के बोलने के विषय तथा उनके चित्र सहित संक्षिप्त परिचय के रंगीन फोल्डर भी छपवाकर तैयार रखे थे जिन्हें प्रतिनिधियों में वितरित किया गया । डॉ. पन्ना शाह एवं उनके पति डॉ. जितेन्द्र शाह तीनों दिन हम लोगों की सेवा में लगे रहे ।

उद्घाटन सत्र

हर अंतर्राष्ट्रीय या राष्ट्रीय सम्मेलन उद्घाटन सत्र से प्रारम्भ होता है । इस अवसर पर न केवल विशेष आमंत्रित ख्याति प्राप्त विशेषज्ञों के सम्मेलन के विचारणीय विषय पर विचार सुनने का मौका मिलता है अपितु हमें विषय के बारे में नई दृष्टि भी प्राप्त होती है जो हमारी अपनी प्रस्तुतियों के लिए लाभप्रद होते हैं। उद्घाटन सत्र भव्य एवं सुनियोजित था । ट्रस्टीशिप कौन्सिल के ऑडिटोरियम में केवल दो हजार लोगों के बैठने की व्यवस्था थी। अतः पास ही स्थित उतने ही बड़े स्टेडियम में बाकी लोगों के लिए बड़े स्क्रीन की व्यवस्था की गई ।

स्वागकर्ताओं में प्रमुख थे संयुक्त राष्ट्र लोक सूचना विभाग के कार्यवाहक अध्यक्ष मेहर नासर 65वें सम्मेलन के अध्यक्ष जेफ्री हफीन्स तथा न्यूयार्क के महापौर के अंतर्राष्ट्रीय कार्यालय के कार्यवाहक अध्यक्ष ब्रेडफर्ड टू बिलेट । उन्होंने शांतिकर्मियों का हृदय से स्वागत किया तथा असुविधाओं के लिए क्षमा याचना की ।

मुख्य भाषण संयुक्त राष्ट्र महासचिव बन की मून ने दिया । वे स्वयं संयुक्त राष्ट्र की दूसरी महत्वपूर्ण बैठक में भाग लेने बाली गए हुए थे लेकिन वीडियो के जरिए उन्होंने अपने भाषण में कहा – *'दुनिया सस्टेनिबिलिटी (वहनीयता) के गहन संकट से गुजर रही है । जलवायु परिवर्तन, वैश्विक उष्णता (ग्लोबल*

वार्मिंग) तथा जैव–विविधता का शनैः–शनैः लोप अवहनीयता (अनसस्टेनिबिलिटी) के उपोत्पाद हैं । पर्यावरणीय एवं पारिस्थितिकीय अवकर्षण भी हमारे अवहनीय जीवनशैली के कारण हैं। आप लोगों के सहयोग से ही संयुक्त राष्ट्र इस संकट का समाधान कर सकेगा । आशा है कि तीन दिनों तक चलने वाला यह सम्मेलन किसी निष्कर्ष पर पहुँचेगा ।'

अन्य वक्ताओं में कार्य निष्पादन कार्यालय की प्रमुख संयुक्त राष्ट्र अधिकारी सुश्री सुसाना मलकोरा, संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष के निदेशक डॉ. बाबाटयून्डे ओसोटिमोहिन तथा संयुक्त राष्ट्र साधारण सभा के अध्यक्ष महामहिम जॉन एश (वीडियो द्वारा) आदि थे । उन सबके वक्तव्यों का केन्द्र बिन्दु वहनीयता का संकट था । उद्घाटन सत्र की प्रमुख वक्ता थी संयुक्त राष्ट्र संघ में अमेरिका की स्थाई प्रतिनिधि महामहिम सामन्था पावर । इस सत्र के संयोजक ने जब उन्हें आमंत्रित किया तो संयुक्त राष्ट्र के वहाँ उपस्थित सभी अधिकारी, कार्यकर्ता और उनकी देखादेखी अन्य प्रतिनिधि भी खड़े होकर तालियों की घड़घड़ाहट से स्वागत करने लगे । मैं और मेरे साथी आश्चर्यचकित थे । ऐसा उत्साह तो बन की मून के समय भी नहीं देखा गया । अमेरिका क्योंकि एक शक्तिशाली देश है, उसके प्रति हमारी जी–हजूरियत की मानसिकता है जो स्पष्ट दीख रही थी। सुश्री सामन्था पावर मुख्य वक्ता अवश्य थी लेकिन उनको सुनने के बाद ऐसा भी नहीं लगा कि अन्य वक्ताओं की तुलना में उन्होंने कोई नई दृष्टि दी हो ।

उद्घाटन सत्र में कुछ चुने हुए सिविल सोसाइटी के प्रतिनिधियों को भी बोलने का अवसर दिया गया । उद्घाटन सत्र दो घण्टे तक चला । मैंने सब वक्तव्य ध्यान से सुने । सब एक मत थे कि मानवता के सामने अन्य जितने भी संकट हैं, उनकी जननी अवहनीयता ही है और सरकारों के पास बजट के अलावा कोई समाधान नहीं है। प्रश्न जो विचारणीय है कि क्या हम विकास के नाम पर हमारा विनाश चाहेंगे ? संयुक्त राष्ट्र ने 2005 से 2015 तक के दशक को वहनीय विकास की शिक्षा का दशक (ए डेकेड फॉर द एज्यूकेशन ऑफ सस्टेनेबल डेवलेपमेंट) घोषित कर रखा है । मुझे नहीं लगता कि गत नौ वर्षों में दुनिया की आम जनता में इस संकट को समझने की क्षमता विकसित हुई हो या उन्होंने अपने कार्यकलापों को वहनीय बनाने की दिशा में कोई कदम उठाए हों। चेतना जागृत करने का कार्य सामाजिक कार्यकर्ता तथा धार्मिक एवं आध्यात्मिक नेता बखूबी कर सकते हैं । हम सब कालिदास का अनुसरण कर रहे हैं, जिस शाखा पर बैठे हैं, वही काट रहे हैं । अभी पचास प्रतिशत ही यह शाखा कटी है – अर्थात् हमारे प्राकृतिक स्रोत जैसे कोयला, पेट्रोलियम, मिनरल्स, जंगल, पैड़–पौधे, ग्लेशियर अभी आधे बचे हुए हैं तथा ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन से मानव जाति का रक्षा कवच – ओजोन की परत – में ज्यादा छेद नहीं हुए हैं। ध्यान रहे ये छेद कारों, हवाई जहाजों, औद्योगिक कल–कारखानों, निर्माण कार्यों से अधिक मात्रा में ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन से होते हैं और समय रहते इस उत्सर्जन में कमी उपभोक्तावाद पर अंकुश लगाकर ही की जा सकती है ।

उद्घाटन सत्र के समय श्री तेजकरण ने पदाधिकारियों से बात करते हुए तथा बाद में कार्यशाला में 'अणुव्रत कैसे अवहनीयता पर ब्रेक लगा सकता है' पर पत्र–वाचन में विस्तृत प्रकाश डाला । आज की परिस्थितियों में अणुव्रत से ही अवहनीतया के विरूद्ध जन चेतना जागृत की जा सकती है लेकिन यदि अणुव्रत आन्दोलन के सूत्रधार आचार्य श्री तुलसी की जन्म शताब्दी के अवसर पर भी हम कुछ हजार अणुव्रत कार्यकर्ताओं का निर्माण नहीं कर सके तो अब क्या होगा ? वर्ष भर के समारोहों में भी अणुव्रत कार्यकर्ता कहाँ थे ?

सम्मेलन का विहंगावलोकन

आयोजन समिति ने इस सम्मेलन का स्वरूप निर्धारित करने में बहुत मेहनत की । उद्घाटन सत्र तथा समापन समारोहों में वक्ताओं के चयन के अतिरिक्त आयोजकों ने पाँच पेनल डिस्कशन, दस राउण्डटेबल्स (गोलमेज वार्ता) का उत्तरदायित्व कुछ अच्छे संसाधनों से सम्पन्न गैर–सरकारी संगठनों को दिया जिन्होंने इसके लिए प्रस्ताव भेजे थे और योग्यता के आधार पर जिनका चयन हुआ । इन पेनलों तथा राउण्डटेबल डिसकशन्स (चर्चाओं) में जिन महत्वपूर्ण विषयों पर विशेषज्ञों द्वारा विचार व्यक्त किए गए, वे थे – वहनीय विकास (सस्टेनेबल डेवलेपमेंट), जलवायु परिवर्तन (क्लाइमेट चेंज), मानवाधिकार, गरीबी उन्मूलन तथा कृत्रिम रूप से परिवर्तित जीन की कोशिकाओं से उत्पादित खाद्य, कृषि, पैड़–पौधे आदि (जेनेटिकली मोडिफाइड फूड) थे ।

राउण्डटेबल्स और पेनल डिस्कशनस के अतिरिक्त इस सम्मेलन का मुख्य आकर्षण थी उस अवसर पर आयोजित की जाने वाली कार्यशालाएँ जो विभिन्न देशों से आए जमीन से जुड़े सक्रिय कार्यकर्ताओं में पारस्परिक विचारों के आदान–प्रदान का मंच थी । प्रारम्भ में आयोजकों ने केवल तीस कार्यशालाओं के आयोजित करने का ही प्रावधान किया था लेकिन प्रस्तावित कार्यशालाओं के विषयों की गुणवत्ता एवं महत्व को देखते हुए बाद में संख्या बढ़ा दी गई । कार्यशालाओं के हजारों प्रस्तावों में से कुछ प्रस्तावों का चयन चुनौती भरा कार्य है । इन कार्यशालाओं में जिन विषयों को विचारार्थ चुना गया, उनमें से कुछ हैं – वैकल्पिक एवं रूपान्तरणात्मक शिक्षा : केरिबियन में कार्य योजना के तीन आदर्श प्रतिमान, प्राकृतिक आपदा, गरीबी तथा वहनीय विकास, 2015 के बाद

के वातावरण में बच्चों के विरूद्ध हिंसा रोकना, वहनीय विकास में सुधार हेतु परिवारों पर ध्यान केन्द्रित करना, वहनीय पर्यटन, वहनीय पृथ्वी के लिए सबक (लेसन्स), 2015 के बाद के वहनीय विकास में वैश्विक नैतिक आचार संहिता का योगदान, 2015 के बाद के एजेण्डे को क्रियान्वित करने के लिए बच्चे एवं युवक परिवर्तन के अभिकर्ता के रूप में, वहनीय विकास लक्ष्य तथा नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्य, भोजन का अधिकार, अनेकता में एकता आदि । इनके अतिरिक्त ढेरों अन्य विषय भी थे । एक साथ कई कार्यशालाएँ आयोजित की गई ताकि प्रतिनिधि अपने पसंद के विषय पर आयोजित कार्यशाला में भाग ले सकें । कार्यशालाओं का मुख्य उद्देश्य कार्यकर्ताओं में पारस्परिक विचार–विमर्श का मौका देना था । मैंने देखा – हर कार्यशाला के हॉल प्रतिनिधियों से खचाखच भरे थे ।

अणुविभा की कार्यशाला : डॉ. केनेथ विन्ड एन्डरसन की रिपोर्ट

हमारी कार्यशाला के लिए कार्यक्रम में 27 अगस्त, 2014 सांयकाल चार बजे का समय दिया गया था । संयुक्त राष्ट्र द्वारा नियुक्त आयोजन समिति की तरफ से प्रत्येक कार्यशाला, राउण्ड टेबल्स तथा पेनल डिस्कशन्स के लिए एक पर्यवेक्षक – रेप्पोटीअर (कौन क्या बोलेगा, उसकी अधिकारिक रिपोर्ट लिखने वाला) नियुक्त किया गया । हमारी कार्यशाला के मूल्यांकन के लिए संयुक्त राष्ट्र द्वारा नियुक्त अधिकारी थे डॉ. केनेथ विन्ड एन्डरसन । उन्होंने अपनी रिपोर्ट के साथ जाने–वाले पत्र में लिखा – *'सब कठिनाइयों के बावजूद मेरा मत है कि यह कार्यशाला सुनियोजित तथा कुशलतापूर्वक क्रियान्वित की गई । कार्यशाला में संवाद उत्साह एवं उर्जा से पूर्ण थे तथा उपस्थित बंधुओं को परिचर्चा में सहभागिता, अनुगमन एवं भावी सूत्र–बंधन के भरपूर अवसर दिए गए। मेरे मत में इस कार्यशाला की गुणवत्ता उच्च कोटि की थी । आपके कोई और प्रश्न हो तो मैं सहर्ष उत्तर दूँगा ।'*

उन्होंने जो रिपोर्ट संयक्त राष्ट्र सचिवालय को भेजी, उसका हिन्दी अनुवाद दिया जा रहा है ताकि पाठकों को भी अणुविभा की टीम द्वारा विदेशों में धर्मसंघ की प्रभावना का जो प्रयास हुआ, उसका यथार्थ चित्र मिल सके।

कार्यशाला के उल्लेखनीय एवं महत्वपूर्ण अंश

कार्यशाला का शीर्षक, प्रायोजक एवं सह–प्रायोजक :

कार्यशाला का शीर्षक : भविष्य की पारिस्थितिकीय वहनीयता, वहनीय जीवन के सूत्र तथा उपाय

प्रायोजक : अणुव्रत विश्व भारती (अणुविभा)

सह–प्रायोजक : जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय लाडनूँ तथा पं. मधुसूदन ओझा वैदिक अध्ययन एवं शोध संस्थान, जयपुर

तिथि : 27 अगस्त, 2014 सांयकाल 4 बजे

इस स्वयंसेवी संस्था की कार्यशाला का संचालन संयुक्त राष्ट्र में अणुविभा के मुख्य प्रतिनिधि श्री अरविंद वोरा द्वारा किया गया तथा पेनल के मुख्य वक्ता अणुविभा के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. सोहनलाल जैन गाँधी थे तथा अन्य वक्ताओं में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री तेजकरण जी जैन, महामंत्री श्री संचय जैन, संयुक्त राष्ट्र में अणुविभा की वैकल्पिक प्रतिनिधि डॉ. पन्ना शाह तथा युवक प्रतिनिधि श्री आयुष विसारिया थे।

इस कार्यशाला को इंटरएक्टिव डिस्कशन (अन्योन्य क्रिया परक परिचर्चा) के रूप में आयोजित किया गया जहाँ सभा में उपस्थित लोगों ने सभी वक्ताओं के बोलने के बाद प्रश्न उठाए और टिप्पणियाँ की । परिचर्चा में जो प्रश्न उठे या टिप्पणियाँ की गई और जिसमें सबकी सहमति दिखी, उसके मुख्य बिन्दु थे – *संयुक्त राष्ट्र से निवेदन किया जाए कि वह पारिस्थितिकीय वहनीयता के लिए एक आचार संहिता जारी करे जो नीचे लिखित सूत्रों पर आधारित हो –*

(क) अनावश्यक हिंसा से बचना,

(ख) पानी, बिजली का उपयोग किफायत से करना तथा उपभोग का सीमाकरण करना,

(ग) स्वस्थ रहने के लिए कम खाना तथा माँसाहार से बचने का प्रयत्न करना,

(घ) ग्रीन हाउस गैसेज के उत्सर्जन में कमी लाना – अर्थात् यात्रा सीमित करना तथा वैकल्पिक उर्जा का उपयोग करना ।

(ङ) धन तथा भौतिक संसाधनों की सीमा निर्धारित करना – एक निश्चित राशि से ज्यादा धन संग्रह नहीं करना और भोग–विलास की वस्तुओं की सीमा करना।

कार्यशाला का सर्वाधिक महत्वपूर्ण निष्कर्ष था कि वहनीयता की परिभाषा जो सहस्राब्दी विकास लक्ष्य (मिलेनियम डेवलपमेंट गोल्स) में दी गई है, केवल मनुष्य और मानव जाति तक ही सीमित है। इस परिभाषा में संसार के समस्त जीवों को सम्मिलित नहीं किया गया है । इस दृष्टि से यह परिभाषा केवल भौतिकता एवं तकनीकी विकास को ही प्रोत्साहित करती है, प्रकृति को विनाश से बचाने के लिए इसमें कुछ भी नहीं है । सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों में 21वीं शताब्दी के संकट के खतरों पर जिनमें पर्यावरण असंतुलन , जनसंख्या विस्फोट, लुप्त होते हुए संसाधन, बढ़ती गरीबी, मनुष्य का अस्तित्व तथा मानवीय एवं संस्कृति मूल्यों का ह्रास आदि मुख्य हैं, पर समाधानात्मक विवेचन नहीं है।

कार्यशाला में हुई चर्चाओं का सार–संक्षेप

श्री अरविंद वोरा ने कार्यशाला के विचारणीय विषय 'भविष्य की पारिस्थितिकीय वहनीयता : वहनीय जीवन के सूत्र एवं उपाय' की ओर सबका ध्यान आकर्षित किया तथा मुख्य वक्ता एवं अन्य वार्ताकारों का स्वागत किया । ये सभी वक्ता जैन धर्म का प्रतिनिधित्व कर रहे थे । जैन धर्म भारत की एक ऐसी धार्मिक परम्परा है जो अनिश्वरवादी है (ईश्वर को कर्ता के रूप में स्वीकार नहीं करती) तथा जो सभी जीवों के प्रति अहिंसा मार्ग का उपदेश देती है । इस परम्परा में सभी जीवित प्राणियों की आध्यात्मिक स्वतंत्रता एवं समानता पर बल दिया गया है।

कार्यशाला के मुख्य वक्ता डॉ. सोहनलाल जैन गाँधी थे जिन्होंने अवहनीयता के संकट और वहनीय विश्व की परिकल्पना (द क्राइसिस ऑफ अनसस्टेनिबिलिटी एण्ड द विजन ऑफ अ सस्टेनेबल वर्ल्ड) विषय पर प्रस्तुति दी । हमारे जीवन में अवहनीयता के कई दुष्परिणाम हो सकते हैं जैसे अपूर्व पारिस्थितिकीय एवं पर्यावरणीय संकट, गरीब और अमीर के बीच खाई का चौड़ होना, नित नए असाध्य रोगों एवं महामारियों की उत्पत्ति तथा आवश्यक वस्तुओं की भारी कमी आदि। इन परिस्थितियों में इस संकट के मूल कारणों का निकटता से अध्ययन करना रोचक हो सकता है । इस सन्दर्भ में उन्होंने आचार्य महाप्रज्ञ के विचारों को उद्घृत किया जिनके अनुसार समस्या का मूल कारण हमारी जीवनशैली है जो नैतिक मूल्यों से पूर्णतः शून्य प्रतिस्पर्धात्मक आधुनिक अर्थशास्त्र से प्रेरित है । उनकी यह टिप्पणी मननीय है –यदि अर्थशास्त्र केवल उपयोगिता के अर्थशास्त्र रूप में जारी रहता है तो हमारे लिए सामाजिक विषमताओं को दूर करना सम्भव नहीं होगा । यदि अहिंसा, शांति, साधनों की शुद्धता, संयम जैसे आधारभूत मानवीय मूल्यों को आधुनिक अर्थशास्त्र के सिद्धान्तों में जोड़ दिया जाता है तो उत्पादन, वितरण एवं उपभोग के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में बड़ा परिवर्तन होगा । डॉ. गाँधी ने अपने भाषण में पर्यावरणीय एवं पारिस्थितिकीय अपक्षय पर संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट तथा माइकल टोबिआज द्वारा लिखित 'तृतीय विश्व युद्ध' का सन्दर्भ देते हुए डॉ. टोबिआज की चेतावनी कि 'जैविक दुखान्तिका दूर नहीं है', का उल्लेख किया और कहा – 'विश्व का परिदृश्य अत्यन्त दुःखद एवं निराशाजनक है।' उन्होंने सम्मेलन के विचारणीय विषय '2015 और उसके आगे : हमारी कार्य योजना' की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए कहा कि इसमें भावी पारिस्थितिकीय वहनीयता की नैतिक आचार संहिता भी सम्मिलित की जावे । डॉ. गाँधी ने चुन्नौतियों का उपसंहार करते हुए कहा – (1) इस सम्भावित दुखान्तिका के बारे में जन चेतना जागृत करने के लिए वैश्विक स्तर पर अभियान चलाया जाए, (2) विकास को पुनः परिभाषित किया जाए तथा (3) संयुक्त राष्ट्र से आग्रह किया जाए कि इको–सस्टेनिबिलिटी ऑफ द फ्यूचर के लिए आचार संहिता जारी करे ।

श्री तेजकरण जैन के भाषण का विषय था – वहनीय भविष्य के मार्ग का मानचित्र (अणुव्रत – अ रोडमेप ऑफ अ सस्टेनेबल फ्यूचर) । इनके भाषण में दो प्रश्न उभर कर सामने आए – (1) वर्तमान सभ्यता कब तक चलेगी ? (2) क्या लोग अपनी कुछ सुख–सुविधाओं को त्याग कर भावी पीढ़ी की आवश्यकताओं के प्रति उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवहार करेंगे ? उनकी प्रस्तुति में दोनों प्रश्नों का उत्तर था – प्रकृति की समरसता के साथ जीना (लिविंग इन हारमनी विथ नेचर) । भगवान महावीर और भगवान बुद्ध के उपदेशों की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए, जिन्होंने अपने शिष्यों को आदेश दिया कि वे सब प्रकार के जीवों (मनुष्य, पैड़–पौधे, कीड़े–मकोड़े, सूक्ष्म जीव आदि) के प्रति श्रद्धा एवं आदर का भाव रखें और कम से कम अनावश्यक जीव हिंसा, झूठे वक्तव्य, बिना इजाजत वस्तुएँ लेने, परिग्रह एवं अनियंत्रित काम वासना से दूर रहें । श्री जैन ने अपना भाषण जारी रखते हुए कहा – आचार्य तुलसी ने सन् 1949 में समाज को भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिक हिंसा तथा अनैतिकता से मुक्त करने के लिए अणुव्रत आन्दोलन प्रारम्भ किया । अणुव्रत शब्द का अर्थ बताते हुए उन्होंने कहा – अणु का अर्थ है छोटा तथा व्रत का अर्थ है किसी बुराई को छोड़ने का संकल्प । उन्होंने अणुव्रत आचार संहिता में निर्धारित 11 छोटे–छोटे अणुव्रतों का उल्लेख किया जिसका उद्देश्य समाज में नैतिक जीवन को प्रोत्साहित करना, अनैतिक जीवन व्यवहार से दूर रहने की प्रेरणा देना है । अनैतिकता ही पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी के अपक्षय का मुख्य कारण है । अणुव्रत भावी वहनीय जीवन के लिए स्वरूपान्तरित व्यक्तियों का नेटवर्क सृजित करता है । पारिस्थितिकी के प्रति मैत्रीपूर्वक व्यवहार करने वाले शान्त समाज के निर्माण की रूपरेखा है अणुव्रत जिसकी जड़ें अणुव्रत आचार संहिता से सिंची जाती हैं । अणुव्रत आन्दोलन व्यक्ति को व्यापार में प्रामाणिकता

बरतने, वासनाओं पर नियंत्रण करने, संग्रह वृत्ति से दूर रहने, अनैतिकता से बचने, पर्यावरण के प्रति जागरूक रहने, हरे वृक्ष न काटने, व्यर्थ में पानी नष्ट न करने आदि की शपथ दिलाता है। भाषण के अन्त में श्री जैन ने प्रसिद्ध पारिस्थितिकी वैज्ञानिक प्रोफेसर आर्ने नेस के पारिस्थितिकी के आठ सिद्धान्तों में से पहला सिद्धान्त – 'मानव (ह्यूमन) और गैर–मानव (नॉन–ह्यूमन) साथ–साथ फले–फूले तो ही इस पृथ्वी पर पारिस्थितिकी संतुलन सम्भव है' का उल्लेख किया। उन्होंने अपने भाषण का समापन संयमः खलु जीवनं के उद्घोष से किया ।

'अहिंसा और अपरिग्रह के जैन सिद्धान्त – भावी पारिस्थितिकीय वहीयता का राजमार्ग (द जैन प्रिंसीपल्स ऑफ अहिंसा एण्ड अपरिग्रह – अ पाथवे टु इको–सस्टेनिबिलिटी ऑफ द फ्यूचर) पर प्रस्तुति देते हुए डॉ. पन्ना शाह ने इक्कीसवीं सदी के संकट के उन पहलुओं की ओर ध्यान आकर्षित किया जो हमारे अस्तित्व के लिए खतरे बन गए हैं जैसे पर्यावरणीय अपक्षय, जनसंख्या विस्फोट, लुप्त होते साधन, बढ़ती गरीबी तथा मानवीय एवं सांस्कृतिक मूल्यों का पतन आदि । इस संकट से बाहर आने का रास्ता इन दो सिद्धान्तों में निहित है अपरिग्रह और अहिंसा। अपरिग्रह का अर्थ है भौतिक पदार्थों के परिग्रह से दूर रहना, ऐसा जीवन जीना, जिसमें संयम, संतुलन, विरति एवं सादगी का प्राबल्य हो । अहिंसा का अर्थ है – मन, वचन और कर्म से हिंसा से दूर रहना । उन्होंने जैन धर्म के एक नारे का उल्लेख किया – अहिंसा परमोधर्मः – अहिंसा परम धर्म है । मन एवं मस्तिष्क में हिंसा के भाव न उत्पन्न होने देना, दूसरे लोगों तथा प्रकृति के प्रति क्रूरता का विचार न आने देना ही अहिंसा है । सामाजिक और वैश्विक रूपान्तरण के लिए जरूरी है नैतिक चेतना तथा वैश्विक स्तर पर शांति की चेतना का जागरण ।

अणुविभा के महामंत्री श्री संचय जैन की प्रस्तुति का विषय था – 'बालकों को वहनीय जीवन में शिक्षित करना, वहनीय भविष्य के लिए बालोदय के प्रयास' (एजूकेटिंग चिल्ड्रन इन सस्टेनेबल लिविंग : अ बालोदय स्ट्रेटेजी फॉर सस्टेनेबल फ्यूचर) । उन्होंने कार्यशाला के बाद वाले भाग में अपने विचार व्यक्त किए । उन्होंने दो उद्धरणों भगवान महावीर की प्रसिद्ध सूक्ति 'जीओ और जीने दो' तथा महात्मा गाँधी के वक्तव्य 'अनेक लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इस पृथ्वी पर पर्याप्त संसाधन हैं किन्तु वे कुछ लोगों के लालच के लिए पर्याप्त नहीं है' – से अपनी प्रस्तुति प्रारम्भ की जो वस्तुतः पारिस्थितिकीय वहनीयता को समझने की कुंजी है। उन्होंने इस सन्दर्भ में बालोदय में बच्चों पर किए गए प्रयोगों को आदर्श प्रतिमान के रूप में रखा जो बालकों के भोलेपन और निर्दोषता पर आधारित है । यहाँ बालकों को शिक्षित करते वक्त कोशिश की जाती है कि उनके ये गुण जब वे बड़े हों, तब भी बने रहें । ऐसा वातावरण निर्मित किया जाता है कि ये बालक स्वाभाविक रूप से स्वस्थ, संतुलित एवं मूल्य–परक जीवनशैली जीएँ। बच्चों में रूझानात्मक परिवर्तन लाने के लिए ही मोहन भाई जैन ने आचार्य तुलसी की प्रेरणा से बाल शांति निलयम की स्थापना की।

इस कार्यशाला के आखिरी वक्ता थे उत्साही युवक श्री आयुष विसारिया । इनका विषय था – 'पारिस्थितिकीय वहनीयता के संकट के समाधान में युवकों की भूमिका (द रोल ऑफ यूथ्स इन रिजोल्विंग द क्राइसिस ऑफ इको–सस्टेनिबिलिटी ऑफ द फ्यूचर) । इन्होंने अपनी प्रस्तुति को विश्व के युवकों की वहनीय एवं पारिस्थितिकीय विकास में भूमिका पर केन्द्रित रखा । ब्रन्टलेंड आयोग के अनुसार वहनीय विकास (सस्टेनेबल डेवलपमेंट) का अर्थ ऐसे विकास से है जो वर्तमान लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति भावी पीढ़ियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने की क्षमता को नुकसान पहुँचाए बिना पूरी करता है । युवक प्रतिनिधि आयुष विसारिया ने कहा कि विकास को बढ़ती तकनीकी, भव्य भवन और अधुनिकीकरण के अर्थ में देखने के बजाए हमें वहनीयता के पाँच क्षेत्रों – अर्थव्यवस्था, पारिस्थितिकी, राजनीति, शिक्षा तथा संस्कृति की समस्याओं के समाधान का प्रयास करना चाहिए जिनमें प्रायः मुख्य समस्या – अवहनीयता मिली हुई रहती है । वह हमारी संस्कृति में अंतर्निहित है जो हमें युवक संस्कृति में कम उम्र में शराब तथा नशे की लत तथा भौतिक समृद्धि की अनियंत्रित इच्छाओं के रूप में दृष्टिगोचर होती है । श्री विसारिया ने उपस्थित लोगों से पूछा – हम अधिक विवेकशील एवं बुद्धिमान क्यों नहीं है?

प्रश्नोत्तर समय

उपस्थित लोगों ने अनुभव किया कि अणुव्रत विश्व भारती (अणुविभा) ने जीवन मूल्य तथा किसी को न मारना के सिद्धान्त पर ज्यादा जोर दिया । लोगों ने पूछा कि न मारने के सिद्धान्त को यदि हम जनसंख्या सीमित करने के परिप्रेक्ष्य में देखें – जैसे दो बच्चों वाला परिवार तथा परिवार नियोजन तो क्या यह व्यावहारिक होगा ? पारिस्थितिकीय समरसता के लिए यह जरूरी है कि मानव और गैर–मानव साथ–साथ फले–फूलें और जो जीवन है, उसका सम्मान करें । संस्कृति तथा युवकों के द्वि–विभाजन की ओर भी ध्यान आकर्षित किया गया जिसे मुख्य कारण के रूप में समर्थन मिला। मीडिया में अभियान के लिए प्रयोग में लाई जाने वाली सामग्री पर भी प्रश्न उठा । संस्कृति के बदलाव का सुझाव एक दीर्घकालीन समाधान के रूप में सामने आया, उदाहरण के लिए कार्य निष्पादन करने वाले पारिस्थितिकीय वहनीयता और अपरिग्रह का समर्थन करे तथा पर्यावरणीय

सामुदायिक सेवा युवकों के लिए और विद्यालयों में अनिवार्य कर दी जाए, स्कूल यूनिफॉर्म का प्रयोग करें ताकि बच्चों में खरीदने की इच्छा कम हो सके ।

निष्कर्ष

सहस्राब्दि विकास लक्ष्यों में पर्यावरणीय वहनीयता आठ उद्देश्यों में से एक है (पर्यावरणीय वहनीयता सुनिश्चित करे) । सुझाव दिया गया कि 1915 के बाद इसी उद्देश्य का चार वहनीय विकास लक्ष्यों में विस्तार किया जाय जिसमें वहनीय विकास की व्याख्या इस तरह की गई है – निरंतर समावेशी तथा वहनीय आर्थिक विकास जिसमें पूर्ण व उत्पादक रोजगार तथा सबके लिए सम्मानपूर्वक काम आदि को प्रोत्साहन मिले । इस विस्तार के लिए सबकी सहमति बनी ।

इस कार्यशाला में भाग लेने वालों ने उपरोक्त विषय पर कार्यशाला के एक भाग के रूप में तथा बाद में इस उद्देश्य की क्रियान्विती में आने वाली चुन्नोत्तियों पर चर्चा की । निष्कर्ष था – अवहनीयता को निष्प्रभावी बनावे और साथ–साथ पारिस्थितिकीय वहनीयता को प्रोत्साहित करें । मुख्य बिन्दु था – एक नई नैतिक आचार संहिता बनाई जाए जो बच्चों से प्रारम्भ हो (क्या बच्चों का भोलापन – पवित्रता, जब वे बड़े हों, सुरक्षित तथा अपरिवर्तित रह सकते हैं?) जिसमें युवक जिसे हम ऐसे नवयुवक के रूप में परिभाषित करें जिसके जीवन का दृष्टिकोण पारिस्थितिकीय रूप से वहनीय हो और जो इस परिवर्तन का उदाहरण बने, नींव का पत्थर बने तथा उसके दृष्टिकोण में अहिंसा, अपरिग्रह, सामाजिक रूपान्तरण एवं वैश्विक रूपान्तरण समाहित हो ।

सम्मेलन की निष्पत्ति : घोषणा–पत्र

तीन दिनों तक दुनिया की उन समस्याओं पर गहन मंथन हुआ जिनके कारण मानवता का अस्तित्व खतरे में है । भोजन का समय सूत्र–बन्धन के लिए सबसे उपयुक्त अवसर था । अलग देशों एवं संस्कृतियों के लोग समूहों में बैठते तथा भोजन के पूर्व, भोजन करते हुए और उसके बाद भी चर्चाएँ जारी रहती । वैसे तो दुनिया के अलग–अलग हिस्सों में कई सम्मेलन होते हैं जो अधिकांश सरकारी होते हैं, उनमें मंत्रीगण, राष्ट्राध्यक्ष, संसद सदस्य भाग लेते हैं तथा इन्हीं समस्याओं पर औपचारिक बैठकें करते हैं लेकिन उसमें न प्रतिबद्धता होती है और न सेवाभाव । वहाँ केवल राजनैतिक दांवपेच का आधिपत्य होता है । उसके ठीक विपरीत दुनिया के विभिन्न देशों के शांति एवं बेहतर भविष्य के लिए प्रतिबद्ध कार्यकर्ताओं की चिंता कोई भौतिक लाभ की नहीं होती, उनकी मुख्य चिंता है वहनीय एवं अहिंसक भविष्य की – क्या हम अपने निजी स्वार्थों से ऊपर उठकर कभी सम्पूर्ण मानव समाज हित की भी सोचेंगे ? आयोजन समिति ने विभिन्न राउण्ड टेबल्स, पेनल डिस्कशन्स तथा कार्यशालाओं के पर्यवेक्षण, मूल्यांकन तथा परिचर्चाओं के प्रतिवेदन तैयार करने के लिए अनुभवी तथा विचारों के आदान–प्रदान क्रिया में दक्ष लोगों को नियुक्त कर रखा था । इनके विचारों को सुनने के बाद इस 65वें अधिवेशन का घोषणा–पत्र तैयार किया गया । यह वस्तुतः परिचर्चाओं से छनकर सामने आई भविष्य की परिकल्पना थी और साथ ही उसके क्रियान्वयन की शक्य कार्य योजना थी । समापन समारोह में केवल इस घोषणा–पत्र को जारी किया गया तथा उसके मुख्य बिन्दुओं की व्याख्या कर प्रतिनिधियों से इसे स्वीकार–अस्वीकार करने के लिए कहा गया । सबने इसके पक्ष में हाथ खड़ा कर सहमति व्यक्त की ।

घोषणा के मुख्य बिन्दु

घोषणा–पत्र का सार संक्षेप यहाँ प्रस्तुत है । प्रथम भाग में भविष्य दृष्टि (विजन) का वर्णन है। उसमें सहस्राब्दी लक्ष्यों के प्रति प्रतिबद्धता तथा वहनीय विकास लक्ष्य – जैसे गरीबी उन्मूलन, विषमता में कमी लाना, सशक्त वहनीयता के आयाम, जलवायु परिवर्तन रोकना, वहनीय शहरों या बस्तियों का निर्माण, वहनीय उपभोग तथा उत्पादन, समुद्रों, पारिस्थितिकी प्रणालियों एवं जैव–विविधता का संरक्षण – प्राप्त करना आदि है । 2015 के बाद के वर्ष इन लक्ष्यों को प्राप्त करने में लगाने होंगे ।

घोषणा–पत्र के दूसरे भाग में कार्य की निगरानी तथा जवाबदेही के सूत्र हैं जिसमें इस बात पर जोर दिया गया है कि यदि 2015 के बाद के एजेण्डे का रूपान्तरणात्मक प्रभाव प्राप्त करना है, जो हर हाल में जरूरी है तो यह आवश्यक है कि इसमें बहुत सावधानी और बारीकी से बनाई गई जवाबदेही की प्रणालियाँ भी सम्मिलित की जाए जिनकी जड़ें मानवाधिकार, प्रत्याशित जीवन व्यवहार, गुणवत्ता के मानक एवं क्रियाविधि में निहित हो । यदि इस कार्य में शामिल सभी लोगों की जवाबदेही तय नहीं होगी तो हमारा एजेण्डा कागज पर ही रह जावेगा ।

तीसरे भाग में कुछ अनुशंसाएँ हैं जो एसडीजीज (सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स) अर्थात् 'वहनीय विकास लक्ष्यों' के इर्दगिर्द केन्द्रित है । 2015 के बाद हमारा विकास वहनीय बना रहे, वर्तमान पीढ़ी और भावी पीढ़ी के लिए पृथ्वी पर उपलब्ध प्राकृतिक साधन सुरक्षित रहें, इसके लिए उन्होंने 16 लक्ष्य निर्धारित किए हैं । वे हैं – (1) लक्ष्य पूर्ति तब ही माना जाए तब यह विश्व के हर क्षेत्र में समान रूप से क्रियान्वित हो गया हो, (2) सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य – अर्थात् भूख समाप्ति, खाद्य सुरक्षा, पोषण में सुधार तथा वहनीय कृषि एवं खाद्य प्रणालियों के

लिए तत्काल उचित कदम उठाए जाए तथा इस लक्ष्य के क्रियान्वयन का काम विश्व खाद्य सुरक्षा समिति को दिया जाए, (3) प्रत्येक व्यक्ति को शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य की सुरक्षा का अधिकार मिले, (4) वहनीयता की शिक्षा तथा मानवाधिकार को विद्यालयी पाठ्यक्रमों में सम्मिलित करने के लिए राष्ट्रीय तथा वैश्विक स्तर पर उनमें सुधार हो, (5) सब लक्ष्यों की प्राप्ति की समय सीमा तय हो, (6) पानी और स्वच्छता वैश्विक स्तर पर सबको प्राप्त हो सके, इसके लिए इसे मानवाधिकार के रूप में मान्यता मिले। शेष लक्ष्यों में उर्जा सबकी आर्थिक पहुँच के भीतर हो, मानव विकास पर जोर हो, स्थानीय एवं देशी तकनीकी को प्रोत्साहन मिले, असमानताओं को कम करने का पुरजोर प्रयास हो, सबको सम्मानपूर्ण जीने का हक मिले, वहनीय उत्पादन एवं उपभोग, जलवायु परिवर्तन तथा नीति निर्धारण से सबकी सहभागिता हो आदि ।

उपसंहार

संयुक्त राष्ट्र लोक सूचना विभाग द्वारा आयोजित गैर–सरकारी संस्थाओं के ऐसे उद्देश्यपूर्ण सम्मेलनों से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक नई चेतना जागृत होती है । इनके महत्व को वही समझ सकता है जिसने इसमें सहभागिता की हो । दुनिया में दो तरह की शक्तियाँ सक्रिय है – एक तो वे जो स्वकेन्द्रित हैं, धनार्जन, सत्ता में सहभागिता, आधिपत्य, आडम्बर, समाज में उच्चता और संग्रह ही उनके जीवन के लक्ष्य होते हैं जिन्हें प्राप्त करने के लिए वे हत्या, दूसरों का अपमान, अत्याचार, शोषण तथा किसी भी अनैतिक साधन का सहारा लेने में संकोच नहीं करते हैं और वे ही इस पृथ्वी को अवहनीय बना रहे हैं । ये वे लोग हैं जो गरीबों के लिए आवंटित धन या साधन हड़प लेते हैं तथा न उनको प्राकृतिक संसाधनों के निरंतर कम होने या समाप्त होने की चिंता है और न ही भविष्य की वहनीयता की । दुर्भाग्य से ऐसे लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है, समाज में वैश्विक स्तर पर करूणा का स्रोत सूख रहा है, धर्म, जाति, रंग आदि के नाम से वे समाज को विभाजित कर रहे हैं तथा दूसरे वे जो उत्तरदायी, नैतिक एवं अनुशासित हैं, जो जीओ और जीने दो के सिद्धान्त में विश्वास करते हैं तथा लोकहित ही जिनके जीवन का लक्ष्य है । ऐसे लोग न केवल संयुक्त राष्ट्र की पहल वाली प्रवृत्तियों में भाग लेते हैं अपितु दुनिया में कहीं भी शांति और अहिसां संबंधी कोई गोष्ठी, संवाद या सम्मेलन हो रहा हो, तो वे सब काम छोड़कर उसमें भाग लेने जाते हैं । ये प्रतिबद्ध, समर्पित एवं नैतिक निष्ठ कार्यकर्ता हैं जो अहिंसक एवं वहनीय विश्व का स्वप्न देखते हैं ।

ऐसे लोगों की सख्या कम नहीं है । हमें अनैतिक, अनुत्तरदायी एवं अवहनीय जीवनशैली की चुन्नौती का मुकाबला करना है और प्रसन्नता है कि अणुविभा और उससे जुड़े अणुव्रत कार्यकर्ता गुरुदेव तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ एवं आचार्य श्री महाश्रमण के अहिंसक भविष्य के स्वप्न को पूरा करने में लगे हुए हैं ।

– डॉ. सोहनलाल गाँधी
बी–402, नागर रेजीडेन्सी
मैन कैलगिरी रोड़, मालवीय नगर
जयपुर – 302 017 (राज.) भारत
फोन : 98280 16989
ई–मेल : `सहंदकीप/विजउंपसण्बवउ